(ISSN: 2582-5526) www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 7 & Issue 1 (January 2025)

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n1.10

CONFERENCE RESEARCH ARTICLE

समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में रामचरितमानस के मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता: एक अध्ययन

(Relevance of Human Values in *Ramcharitmanas* in Contemporary Educational Context: A Study)

डॉ० अनुपम सिंह
सहायक आचार्य
शिक्षाशास्त्र विभाग
दी०द० उ० गो० वि० वि० गोरखपुर

अंशुमान दुबे
शोध छात्र (UGC JRF)
शिक्षाशास्त्र विभाग
दी० द० उ० गो० वि० वि० गोरखपुर

Abstract

In the modern education system, ethics and human values are becoming increasingly peripheral. Due to the emphasis on technical and vocational skills, younger generations are moving away from education grounded in moral and cultural values. In this context, epic texts like Goswami Tulsidas's *Ramcharitmanas*, which advocate numerous lofty human values such as truth, righteousness, compassion, service, and respect for women, become highly relevant to contemporary education. This research paper examines the necessity, relevance, and potential effective implementation of these human values advocated in *Ramcharitmanas* within the current educational system. The aim is to demonstrate how integrating these values into curricula and co-curricular activities can make modern education more ethical and sensitive. Such inclusion not only fosters personal development but also enhances cultural awareness, ethics, and harmony in society.

Keywords: Modern education system, Ethics and human values, Moral education, Respect for women, Inclusion of values in education, Social harmony

सारांश
आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का स्थान गौण होता जा रहा है। तकनीकी और व्यावसायिक कौशल पर बढ़ते जोर के कारण युवा पीढ़ी नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा से दूर होती जा रही है। ऐसे में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस जैसा महान ग्रंथ जो सत्य, धर्म, करुणा, सेवा, और नारी सम्मान समेत अनेकों उच्च मानवीय मूल्यों का प्रतिपादन करता हैं वह आधुनिक शिक्षा परिदृश्य में अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता हैं। प्रस्तुत शोधपत्र वर्तमान शिक्षा प्रणाली में रामचरित मानस द्वारा प्रतिपादित मानवीय मूल्यों की आवश्यकता, उनकी प्रासंगिकता तथा उनके प्रभावी क्रियान्वयन की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। इस शोधपत्र के माध्यम से यह उजागर करने का प्रयास है कि कैसे इन मूल्यों को पाठ्यक्रम और सह-शैक्षिक गतिविधियों में शामिल करके आधुनिक शिक्षा पद्धति को अधिक नैतिक और संवेदनशील बनाया जा सकता है। शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों के समावेश से न केवल व्यक्तिगत विकास होगा, बल्कि समाज में सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिकता, और समरसता को भी बढ़ावा मिलेगा।

मुख्य शब्दः आधुनिक शिक्षा प्रणाली ,नैतिकता और मानवीय मूल्य,नैतिक शिक्षा, नारी सम्मान, शिक्षा में मूल्यों का समावेश,सामाजिक समरसता

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य न केवल ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि व्यक्ति के चरित्र का निर्माण और समाज में नैतिकता का प्रसार करना भी है। वर्तमान समय में, शैक्षिक प्रणाली में तकनीकी दक्षता और प्रतिस्पर्धा पर अधिक बल दिया जा रहा है परिणामस्वरूप नैतिक शिक्षा, जो किसी भी समाज का आधार है, धीरे-धीरे हाशिये पर आ रही है। छात्रों में मानसिक तनाव, भौतिकवादी सोच, और सहानुभूति की कमी निरंतर बढ़ रही है। ऐसे शैक्षिक परिदृश्य में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' व्यष्टि एवं समष्टि के सांस्कृतिक चेतना की आधारशिला है। रामचरितमानस भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रतिबिंब है। इसमें न केवल धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण का समावेश है, बल्कि समाज कल्याण हेतु आवश्यक नैतिकता, समानता, और आध्यात्मिकता को भी परिभाषित किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसे एक ऐसे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया, जो जीवन के हर पहलू को सुसंस्कृत और संतुलित बनाने का पथप्रदर्शक है। सत्य, करुणा, धैर्य, कर्तव्य, सहिष्णुता, और समानता जैसे मूल्य समाज के विकास और स्थायित्व के लिए अनिवार्य हैं। रामचरितमानस में वर्णित ये मूल्य केवल धार्मिक ग्रंथ तक सीमित नहीं है अपितु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन्हें लागू करने की आवश्यकता एवं सार्थकता है।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में वर्णित मानवीय मूल्यों जैसे सत्य, करुणा, धर्म, अहिंसा, और समानता को समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में पुनः स्थापित करना है। वर्तमान समय में नैतिक शिक्षा का ह्रास, भौतिकवाद की बढ़ती प्रवृत्ति, और छात्रों में संवेदनशीलता की कमी जैसी चुनौतियों को देखते हुए, रामचरितमानस के आदर्शों को शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाना आवश्यक है। यह शोध छात्रों में नैतिकता, सहानुभूति, और नेतृत्व जैसे गुणों को विकसित करने के साथ-साथ समाज में शांति, सद्भाव और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने की दिशा में योगदान देगा।

शोध की पृष्ठभूमि

मानवीय मूल्य वे नैतिक सिद्धांत हैं, जो न केवल व्यक्ति के आंतरिक जीवन को संतुलित और उन्नत बनाते हैं, बल्कि समाज और शिक्षा प्रणाली की स्थिरता का भी आधार हैं। ये मूल्य समाज में सहिष्णुता, करुणा, और न्याय की स्थापना करते हैं। इनका महत्व केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि ये सामूहिक विकास और सामाजिक सद्भावना के लिए भी अनिवार्य हैं। मानवीय मूल्य व्यक्ति को दयालु, संवेदनशील, और नैतिक बनाते हैं, जिससे समाज में शांति और सद्भाव का प्रसार होता है। रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने दया, धर्म, सत्य, और करुणा जैसे उच्च मानवीय मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया है। इन मूल्यों को उन्होंने जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत किया। उदाहरणस्वरूप, तुलसीदास लिखते हैं: *"परहित* ***सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।" (उत्तरकाण्ड)*** । इस चौपाई का अर्थ है कि दूसरों की भलाई से बड़ा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट पहुंचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है। यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि मानवीय मूल्यों का पालन करना न केवल एक व्यक्तिगत कर्तव्य है, बल्कि समाज के लिए एक नैतिक आधार भी है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की उपेक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। प्रतिस्पर्धा और भौतिकवाद के बढ़ते प्रभाव ने छात्रों को सहानुभूति, करुणा और नैतिकता जैसे गुणों से दूर कर दिया है। इस संदर्भ में, रामचरितमानस में वर्णित मानवीय मूल्य शिक्षा प्रणाली को नैतिक और सामाजिक संतुलन प्रदान करने में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध हो सकते हैं।

रामचरितमानस में प्रतिपादित प्रमुख मानवीय मूल्य

रामचरितमानस भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक ऐसा महान ग्रंथ है, जिसमें मानवीय मूल्यों का अद्भुत समावेश है। इसमें विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से जीवन के लिए उपयोगी नैतिक और सामाजिक सिद्धांतों को प्रस्तुत किया गया है, जो वर्तमान शिक्षण व्यवस्था और समाज निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। इन मूल्यों का अध्ययन और अनुपालन समाज में नैतिकता, सद्भावना, और सहिष्णुता को बढ़ावा देने मे सहायक सिद्ध होगा।

सत्य और सदाचार: रामचरितमानस में सत्य और सदाचार को जीवन का मूलभूत सिद्धांत बताया गया है। श्रीराम का चरित्र सत्य और धर्म के आदर्श पर आधारित है। उनकी जीवन शैली यह सिखाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और वचन का पालन सर्वोपरि है।

"रघुकुल रीत सदा चलि आई।

प्राण जाए पर वचन न जाई।" (अयोध्याक़ांड)

यह चौपाई रघुवंश की परंपरा को उजागर करती है, जिसमें वचन की मर्यादा को जीवन के मोह से अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। यह उदाहरण छात्रों में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, और नैतिकता का विकास करने में सहायक हो सकता है। सत्य और सदाचार न केवल व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाते हैं, बल्कि समाज में विश्वास और सामंजस्य की भावना भी उत्पन्न करते हैं। वर्तमान समय में, जब धोखाधड़ी और अनैतिकता का प्रचलन बढ़ रहा है, सत्यनिष्ठा की शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है।

धैर्य और सहनशीलता: रामचरितमानस में माता सीता का चरित्र धैर्य और सहनशीलता का प्रतीक है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपने धर्म और मूल्यों का त्याग नहीं करना चाहिए।

सठ सूनें हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥ (सुन्दरकाण्ड)

प्रस्तुत चौपाई में माता सीता द्वारा रावण का प्रतिकार कठिन समय में भी उनके ईश्वर में आस्था और दृढ़ता का परिचायक है। यह प्रसंग छात्रों को विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और सहनशीलता का महत्व समझाने में

सहायक हो सकता है। आधुनिक युग में मानसिक तनाव और असंतोष बढ़ रहे हैं। ऐसे में यह मूल्य छात्रों को मानसिक शांति और स्थिरता प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

समर्पण और भक्ति: भक्त शिरोमणि हनुमान का चरित्र निःस्वार्थ भक्ति और समर्पण का आदर्श उदाहरण है। उनके लिए श्रीराम की सेवा ही जीवन का उद्देश्य है।

हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम (सुन्दरकाण्ड)

हनुमान की सेवभक्ति एवं कर्तव्यनिष्ठा से छात्र छात्राओ को यह सीखना चाहिए कि कर्तव्य के प्रति निःस्वार्थ भावना और समर्पण जीवन में सफलता और संतोष के लिए आवश्यक हैं। यह मूल्य छात्रों में कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन, और निःस्वार्थ सेवा का विकास करने में आती आवश्यक है। आज जब भौतिकवाद और स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ रही है, यह प्रसंग सामाजिक जीवन और शिक्षण प्रणाली दोनों ही के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

सामाजिक समानता: रामचरितमानस में सामाजिक समानता और समरसता की शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। श्रीराम का निषादराज और शबरी के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार समाज में समानता और एकता का संदेश है।

कह रघुपति सुनु भामिनी बाता। मानऊं एक भगति कर नाता।।

जाति पांति कुल धर्म बडाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।

भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिए जैसा। (अरण्यकाण्ड)

श्रीराम ने जाति, वर्ग, और सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर सभी के प्रति समानता और करुणा का संदेश दिया। श्रीराम शबरी मिलन एवं निशादराज से मित्रता एवं प्रेम का भाव छात्रों को यह सिखाने में सहायक हो सकता है कि जाति, धर्म, और लिंग के आधार पर भेदभाव अनुचित है। वर्तमान समय में, जब समाज में विभाजन और असमानता की भावना बढ़ रही है, रामचरितमानस के ये आदर्श समानता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने में समर्थ है।

नेतृत्व और न्याय : श्रीराम का नेतृत्व न्याय और करुणा का आदर्श है। उन्होंने अपने राज्य में समस्त प्रजा के प्रति समान व्यवहार किया और यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक को न्याय मिले। उनके राज्य मे प्रत्येक मे परस्पर प्रीति का भाव विद्यमान था।

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती (उत्तरकाण्ड)

राम राज्य का यह आदर्श सिखाता है कि एक सच्चा नेता वही होता है, जो अपनी प्रजा की समस्याओं को समझे और करुणा के साथ न्याय प्रदान करे जिससे प्रजा मे संतुष्टि एवं जनकल्याण की भावना पुष्ट हो। वर्तमान परिदृश्य मे इन मूल्यों का छात्रों में नेतृत्व के गुणों का विकास करने में सहायक है। शिक्षा के क्षेत्र में यह गुण शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह समाज में नैतिक नेतृत्व और न्याय को स्थापित करने की दिशा मे महत्वपूर्ण कदम है।

बदलते शैक्षिक परिदृश्य में चुनौतियाँ

वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली के बदलते स्वरूप ने समाज और छात्रों के समग्र विकास पर गंभीर प्रभाव डाला है। यह परिवर्तन मुख्य रूप से नैतिक शिक्षा की अनदेखी, भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा की बढ़ती प्रवृत्ति, मूल्य आधारित पाठ्यक्रम की अनुपस्थिति, और मानसिक तनाव व असंवेदनशीलता के बढ़ते स्तर के रूप में देखा जा सकता है। इन सभी कारकों ने शिक्षा के मूल उद्देश्य–समाज में नैतिकता और संवेदनशीलता का विकास–को कमजोर कर दिया है। सबसे बड़ी चुनौती नैतिक शिक्षा का ह्रास है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और मूल्यों का समावेश लगभग नगण्य हो गया है। शिक्षण का उद्देश्य अब केवल शैक्षिक उपलब्धियों तक सीमित रह गया है, जो छात्रों को एक समग्र और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में विकसित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। नैतिक मूल्यों की कमी के कारण समाज में आपराधिक प्रवृत्तियों, अनैतिक व्यवहार, और सामाजिक अस्थिरता में वृद्धि हो रही है। शिक्षा का यह स्वरूप न केवल छात्रों की व्यक्तिगत पहचान को कमजोर कर रहा है, बल्कि समाज के मूलभूत नैतिक ढांचे को भी प्रभावित कर रहा है।

भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा दूसरी प्रमुख चुनौती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने ज्ञान को केवल आर्थिक सफलता और कैरियर निर्माण का साधन बना दिया है। छात्रों पर अच्छे अंक लाने और प्रतिष्ठित नौकरियां पाने का इतना अधिक दबाव है कि वे नैतिकता, संवेदनशीलता, और करुणा जैसे गुणों को अनदेखा कर रहे हैं। भौतिकवादी सोच ने छात्रों को स्वार्थी और प्रतिस्पर्धी बना दिया है, जिससे सामूहिक विकास और सामाजिक सौहार्द में बाधा उत्पन्न हो रही है। तीसरी समस्या मूल्य आधारित पाठ्यक्रम की कमी है। अधिकांश पाठ्यक्रम केवल तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान पर केंद्रित हैं, जिनमें नैतिक और मानवीय मूल्यों को शामिल करने की आवश्यकता की अनदेखी की गई है। पाठ्यक्रम में सहानुभूति, करुणा, सत्य, और सामाजिक समानता जैसे मूल्यों का अभाव छात्रों को एक नैतिक दृष्टिकोण से वंचित कर रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि छात्र अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में अनैतिक और असंवेदनशील व्यवहार करने लगे हैं।

मानसिक तनाव और असंवेदनशीलता का बढ़ता स्तर शिक्षा प्रणाली की चौथी बड़ी चुनौती है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा का दबाव, और समाज के उच्च अपेक्षाओं के कारण छात्रों में मानसिक तनाव तेजी से बढ़ रहा है। साथ ही, नैतिक शिक्षा की कमी ने छात्रों को दूसरों के प्रति असंवेदनशील बना दिया है। यह प्रवृत्ति केवल छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को ही नहीं प्रभावित कर रही है, बल्कि समाज के ताने-बाने को भी कमजोर कर रही है। इन सभी चुनौतियों ने शिक्षा प्रणाली को एक संवेदनशील और नैतिक समाज बनाने के अपने उद्देश्य से भटका दिया है। रामचरितमानस जैसे ग्रंथों मे निहित मानवीय मूल्यों को शिक्षा प्रणाली में पुनः स्थापित करना इन समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता है।

रामचरितमानस में निहित मूल्यों की प्रासंगिकता

रामचरितमानस में वर्णित मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता आज के बदलते समाज और शिक्षा प्रणाली में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसका नैतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य भी आधुनिक समय में अत्यधिक उपयोगी है। इसके आदर्श और सिद्धांत छात्रों के चरित्र निर्माण, सामाजिक सौहार्द, आध्यात्मिकता, और नेतृत्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। चरित्र निर्माण में रामचरितमानस की भूमिका सबसे प्रमुख है। इस ग्रंथ के आदर्श पात्र, जैसे श्रीराम, लक्ष्मण, और सीता, छात्रों को आत्मअनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, और सत्यनिष्ठा का संदेश देते हैं। श्रीराम का जीवन हमें सिखाता है कि अपने सिद्धांतों और वचनों का पालन किसी भी परिस्थिति में किया जाना चाहिए। *"रघुकुल* ***रीत सदा चलि आई, प्राण जाए पर वचन न जाई" (अयोध्याकाण्ड)*** जैसे उद्धरण छात्रों में सत्यनिष्ठा और जिम्मेदारी का विकास करते हैं। ये मूल्य न केवल छात्रों को व्यक्तिगत जीवन में आदर्श बनने की प्रेरणा देते हैं, बल्कि उन्हें समाज के प्रति भी संवेदनशील बनाते हैं।

सामाजिक सौहार्द की दृष्टि से रामचरितमानस में विविधता में एकता का संदेश स्पष्ट रूप से मिलता है। श्रीराम का निषादराज और शबरी के साथ व्यवहार सामाजिक समानता और समरसता का आदर्श प्रस्तुत करता

है। यह मूल्य छात्रों में समाज के प्रति समानता और समरसता की भावना विकसित कर सकता है, जो आज के समय में सामाजिक विभाजन और असमानता की चुनौतियों का समाधान करने में सहायक हो सकता है।

आध्यात्मिक शिक्षा भी रामचरितमानस का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह ग्रंथ भौतिकवाद और बाहरी आकर्षण से मुक्त होकर आत्मा की शांति और आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करता है। आज की शिक्षा प्रणाली में, जहां भौतिकवादी सोच और प्रतिस्पर्धा ने छात्रों को मानसिक रूप से अस्थिर बना दिया है, रामचरितमानस के आध्यात्मिक मूल्य, जैसे त्याग, सहनशीलता, और संतोष, मानसिक शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नेतृत्व विकास के संदर्भ में रामचरितमानस में श्रीराम का चरित्र आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। उनका नेतृत्व गुण करुणा, न्याय, और विवेक पर आधारित है। यह छात्रों को न केवल एक प्रभावी नेतृत्व प्रदान करने की शिक्षा देता है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करता है। रामचरितमानस मे निहित इन आदर्शों का समावेश छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को सशक्त बनाने के साथ-साथ समाज में नैतिकता, शांति, और समानता को बढ़ावा दे सकता है।

शैक्षिक प्रणाली में मूल्यों का समावेश एवं संभावित लाभ

आधुनिक शैक्षिक प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश न केवल छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज के नैतिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के लिए भी अनिवार्य है। रामचरितमानस जैसे ग्रंथ, जिनमें मानवीय मूल्यों का अद्भुत संगम है, शिक्षा प्रणाली के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान कर सकते हैं। पिछले कुछ दशक से शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को प्रमुखता दी जा रही थी , जिनमें नैतिक मूल्यों का समावेश नगण्य रहा । यह असंतुलन शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को बाधित करता रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के अंतर्गत नैतिक एवं भारत के गौरवशाली अतीत एवं महान ग्रंथों मे निहित शिक्षाओ की वर्तमान समय मे प्रासंगिकता को बल देने का प्रयास किया जा रहा है। इस श्रंखला में रामचरितमानस के नैतिक सिद्धांतों को शिक्षा प्रणाली में विभिन्न तरीकों से प्रभावी ढंग से जोड़ा जा सकता है।

सबसे पहले, पाठ्यक्रम में समावेश के माध्यम से रामचरितमानस की शिक्षाओं को छात्रों तक पहुंचाया जा सकता है। रामचरितमानस में वर्णित कहानियाँ, जैसे श्रीराम का अपने वचनों के प्रति अडिग रहना, लक्ष्मण की निष्ठा, और सीता का धैर्य, छात्रों को चरित्र निर्माण और नैतिकता का पाठ पढ़ा सकते हैं। इन कहानियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर छात्रों को प्राचीन साहित्य के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकता है। इससे न केवल छात्रों के व्यक्तिगत जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा, बल्कि यह उनके सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में भी मार्गदर्शक सिद्ध होगा। सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का उपयोग नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिए किया जा सकता है। नैतिक शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है; इसे छात्रों के व्यवहार और उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए व्यावहारिक अनुभव आवश्यक है। रामचरितमानस के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित नाटकों, चर्चाओं, और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हनुमानजी के समर्पण और निष्ठा पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियाँ छात्रों को समर्पण और निःस्वार्थता के महत्व को समझने में सहायक हो सकती हैं। इसी प्रकार, शबरी के प्रसंग को चित्रित करके छात्रों में सामाजिक समानता और समरसता की भावना विकसित की जा सकती है।

शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षकों का प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षकों को न केवल विषय सामग्री सिखाने के लिए तैयार किया जाना चाहिए, बल्कि उन्हें छात्रों के लिए नैतिक मार्गदर्शक के रूप में भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। रामचरितमानस के मूल्यों को सिखाने के लिए शिक्षकों को इस ग्रंथ की गहरी समझ प्रदान की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को छात्रों की समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने के लिए संवेदनशीलता और सहानुभूति के गुणों के विकास पर आधारित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

डिजिटल संसाधनों का उपयोग नैतिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने में सहायक हो सकता है। आज के युग में, छात्रों तक पहुँचने के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग एक सशक्त माध्यम बन गया है। रामचरितमानस के प्रसंगों पर आधारित एनिमेशन, वीडियो, और डिजिटल पाठ्य सामग्री छात्रों के लिए अधिक आकर्षक और प्रभावशाली हो सकती है। उदाहरण के लिए, राम के नेतृत्व और न्यायप्रियता पर आधारित लघु फिल्मों को छात्रों के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है, जिससे वे इन गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकें। डिजिटल संसाधनों के माध्यम से छात्रों को उनकी रुचि के अनुसार नैतिक शिक्षा प्रदान की जा सकती है, जो अधिक प्रभावी और व्यावहारिक होगी।

संभावित लाभ

रामचरितमानस के मूल्यों का शैक्षिक प्रणाली में समावेश बहुआयामी लाभ प्रदान कर सकता है। सबसे प्रमुख लाभ छात्रों के चरित्र निर्माण में देखा जा सकता है। आत्मअनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, और करुणा जैसे गुणों के विकास से छात्र एक सशक्त और नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, समाज में शांति और सद्भाव का प्रसार भी इन मूल्यों के माध्यम से संभव हो सकता है। जब छात्र समानता, समरसता, और सहानुभूति जैसे मूल्यों को आत्मसात करेंगे, तो समाज में आपसी समझ और सहयोग का वातावरण विकसित होगा। इसके साथ ही, रामचरितमानस के मूल्यों के माध्यम से आत्मनिर्भर और संवेदनशील नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है। जब छात्र भौतिकवादी सोच और प्रतिस्पर्धा से ऊपर उठकर नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को अपनाएंगे, तो वे अपने जीवन में व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर सकारात्मक बदलाव लाएंगे। इस प्रकार, शैक्षिक प्रणाली में रामचरितमानस के मूल्यों का समावेश केवल छात्रों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए एक सशक्त माध्यम बन सकता है। इससे नैतिकता और आध्यात्मिकता पर आधारित एक मजबूत समाज का निर्माण संभव होगा।

निष्कर्ष

रामचरितमानस में निहित मानवीय मूल्य समकालीन शैक्षिक प्रणाली के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हैं। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत किए गए ये मूल्य जैसे सत्य, धर्म, करुणा, समर्पण, और न्याय, न केवल व्यक्तिगत जीवन को आदर्श रूप में ढालने के लिए आवश्यक हैं, बल्कि समाज की सामाजिक और नैतिक धारा को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जब हम इन मूल्यों को समाविष्ट करेंगे, तो यह न केवल छात्रों के नैतिक और व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा, बल्कि समाज को भी अधिक संवेदनशील, सहिष्णु और न्यायपूर्ण बनाने में योगदान होगा।

आज के भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धी युग में, रामचरितमानस के ये मूल्य शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान करने के साथ-साथ समाज के भीतर शांति और समानता की भावना का प्रसार कर सकते हैं। अगर इन मूल्यों को पाठ्यक्रम में समाहित किया जाए, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से छात्रों तक पहुंचाया जाए, और शिक्षकों को इनका प्रभावी उपयोग सिखाया जाए, तो इससे न केवल छात्रों का मानसिक और भावनात्मक विकास होगा, बल्कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के प्रवर्तक भी बनेंगे। अंततः, रामचरितमानस के यह मानवीय मूल्य शैक्षिक प्रणाली में समाविष्ट करने से एक ऐसा समाज बन सकेगा, जिसमें नैतिकता, करुणा और समानता का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत हो। ऐसे समाज के निर्माण में ये मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो समाज के समग्र विकास और प्रगति के लिए अनिवार्य हैं।

संदर्भ सूची

Sirswal, Desh Raj (2017). भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता. Parmita 8 (8):88-91.

श्रीरामचारितमानस - गोस्वामी तुलसीदास - गीताप्रेस गोरखपुर

राणा, वंदना (2021). वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता: एक अवलोकन . International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 6 (3): 28-33

आज भी प्रासंगिक है रामचरितमानस – उमेश पाठक - http://www.bhartiyadharohar.com/

आधुनिक संदर्भ में रामचरितमानस की प्रासंगिकता – अध्याय 3 और 4 – डॉ. लक्ष्मी सिंह – बिहार ग्रंथ अकादमी पटना

Singh, Reetudhwaj. (2016). Socio poleticalStudy of Ramcharit Manas. Sanskriti Pravah. 1. 5.

भारतीय संस्कृति के परिशीलन में रामचरित मानस – डॉ कृष्ण कुमार शर्मा